रूमी

डेनी जॉनसन डेविस

रूमी

जान लो कि प्रेम की लहरें ही स्वर्ग के पहियों को घुमाती हैं;
प्यार के बिना दुनिया जीवन-हीन होगी.

प्रत्येक वर्ष दिसंबर में, तुर्की के कोन्या शहर में, महान धार्मिक कवि, जलालुद्दीन रूमी की मृत्यु को संगीत और विशेष नृत्य के साथ मनाया जाता है. उनके अनुयायी, जिन्हें "गोल-गोल घूमने वाले दरवेशों" के रूप में जाना जाता है, दुनिया भर में बहुत प्रसिद्ध हैं. दिसंबर 1273 में कोन्या में ही रूमी की मृत्यु हुई और यहीं पर उन्होंने अपनी महान कविता, "मथनवी" की रचना की.

जब वो युवा थे तभी से ही लोगों ने रूमी की असाधारण क्षमताओं को पहचाना था. एक कहानी के अनुसार उनके पिता फारसी कवि अत्तर से मिलने ले उन्हें गए थे. अत्तर, प्रसिद्ध लंबी कविता "द कॉन्फ्रेंस ऑफ द बर्ड्स" के लेखक थे. वृद्ध अत्तर उस युवा से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने रूमी को अपनी एक पुस्तक भेंट की.

एक अन्य कहानी के अनुसार ग्यारह साल की उम्र में, रूमी कुछ युवा दोस्तों के साथ अपने माता-पिता के घर की छत पर खेल रहे थे. तब अन्य बच्चों ने सुझाव दिया कि उन्हें अगले घर में अपना खेल जारी रखना चाहिए. रूमी ने कहा कि वो अपने घर की सीढ़ियों से नीचे उतरने और पड़ोस के घर की सीढ़ियों से ऊपर चढ़ने के बजाए अगले घर की छत पर सीधे कूदकर जाना पसंद करेंगे. लेकिन दोनों घरों की छतों के बीच एक बड़ा फासला था इसलिए रूमी के दोस्तों ने उसका मजाक उड़ाया: वो इतनी लम्बी खाई को कैसे कूदेगा? दोस्तों ने रूमी को उसके अपने दम पर ही छोड़ दिया. जब दोस्त दूसरी छत पर पहुंचे तो वो यह देखकर चकित रह गए कि रूमी वहां उनका पहले से ही इंतज़ार कर रहा था! उसने यह कैसे किया? दोस्तों ने सोचा.

रूमी का जन्म आज अफगानिस्तान नाम से जाने वाले देश के बल्ख शहर में हुआ था. उनके पिता एक प्रसिद्ध धार्मिक व्यक्ति और एक महान विद्वान थे, और इस्लाम के पहले खलीफा - अबू बक्र के वंशज थे. इसलिए, रूमी एक सख्त इस्लामी शिक्षण के माहौल में पले-बढ़े. जब वो छोटे थे तभी उनके परिवार ने बल्ख छोड़ दिया क्योंकि वहां मंगोल (युद्धप्रिय लोग) युद्ध करने की धमकी दे रहे थे. दरअसल, दो साल बाद, मंगोलों ने बल्ख को नष्ट कर दिया और उन्होंने हजारों लोगों की हत्या कर डाली.

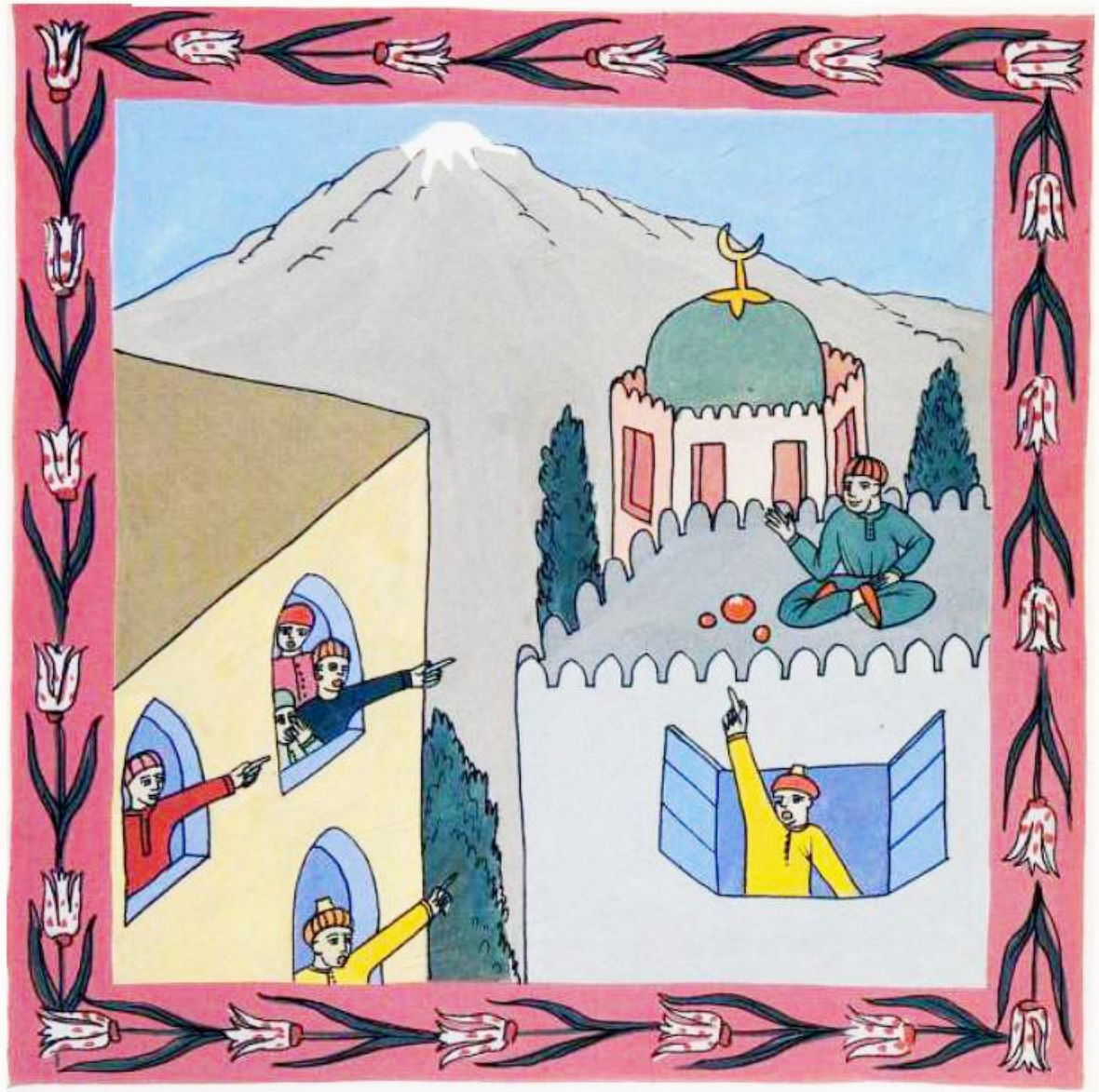

बल्ख छोड़ने के बाद रूमी के पिता अपने परिवार को मक्का की तीर्थ यात्रा पर ले गए. उसके बाद में वो तुर्की के कोन्या शहर में बसने से पहले दमिश्क और अलेप्पो में कुछ समय के लिए रहे. नया घर बसाने के लिए कोन्या एक आदर्श स्थान था, क्योंकि वो उस समय मंगोलों के हमले से बहुत दूर था; इसके अलावा, वो एक ऐसा स्थान था जहां इस्लामी दुनिया के तमाम विद्वान आते थे.

रूमी के पिता ने जल्दी ही कोन्या में एक शिक्षक के रूप में अपनी प्रतिष्ठा बना ली. उस समय तक उनका बेटा भी बड़ा हो गया था और उसकी शादी हो चुकी थी, और वो खुद एक महान शिक्षक के रूप में पहचाना जाता था.

लेकिन वो राजनीतिक हलचल वाले साल थे और बहुत जल्द ही मंगोल सेनाएं अपनी विजय में आगे बढ़ गईं और वो कोन्या शहर के पास आ गईं. उस दौरान रूमी ने अपने जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना का अनुभव किया. वो एक ऐसी घटना थी जिसने उन्हें नाटकीय रूप से बदल दिया. वर्ष 1244 में उनकी मुलाकात शम्सुद्दीन तबरीज़ी नाम के एक शख्स से हुई, जिन्होंने अपना सामान्य जीवन छोड़ दिया था और वो एक भटकने वाले सूफी या दरवेश बन गए थे. सूफी ऐसे मुस्लिम लोग होते हैं जो अपने सामान्य जीवन को त्याग देते हैं और फिर ईश्वर के महान रहस्य को समझने की कोशिश में पूरा अपना जीवन समर्पित कर देते हैं.

शम्सुद्दीन (अरबी में उसका मतलब था "धर्म का सूर्य"), एक अजीब और असामान्य व्यक्ति थे, जो किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में मुस्लिम दुनिया के हिस्सों में भटक रहे थे, जिससे वो जीवन के रहस्यों का ज्ञान प्राप्त कर सके. शम्सुद्दीन को अच्छे कपड़े या अच्छे भोजन, पैसे या सामाजिक प्रतिष्ठा या सांसारिक महत्वाकांक्षाओं में से किसी में कोई रुचि नहीं थी. वो अपने साथियों की राय की भी परवाह नहीं करते थे और वो बातचीत में रूखे और कठोर भी हो सकते थे. वो रूमी से करीब दस साल बड़े थे. दोनों पहली बार कोन्या में, एक सराय में मिले, एक ऐसी सराय में जहाँ गरीब मुसाफिर आकर ठहरते थे.

रूमी को शम्सुद्दीन में एक ऐसा व्यक्ति दिखा, जो अन्य लोगों के विपरीत, उन सभी चीजों को अस्वीकार करने का साहस रखता था, जिसके लिए ज्यादातर लोग प्रयास करते थे: सुरक्षा, प्रसिद्धि और पैसा. तुरंत, रूमी अपने दिन और रात के अधिकांश घंटे शम्सुद्दीन के साथ बातचीत और चर्चा में बिताने लगे. जल्द ही रूमी ने उन शेखों, विद्वानों और विद्वानों और उच्च-वर्गीय समाज का दौरा करना छोड़ दिया, जिसके वो एक सम्मानित सदस्य थे. फिर अपने दोस्त की तरह ही, रूमी में भी सांसारिक मामलों के प्रति कोई दिलचस्पी नहीं रही.

यह स्वाभाविक था कि रूमी के पुराने दोस्त जिनके साथ वो अब समय नहीं बिताते थे, इस अजनबी से ईर्ष्या करने लगें जिसकी संगत में रूमी अब अपना सारा समय बिताते थे. रूमी के दूसरे बेटे में इस अजनबी के प्रति विशेष रूप से कड़वाहट थी जिसने उसके परिवार में घुसपैठ की थी और उसके पिता को हथिया लिया था. शम्सुद्दीन, अब इस बात से अच्छी तरह अवगत हो गए थे कि कोन्या में उनकी उपस्थिति और रूमी पर उसके प्रभाव से बहुत से लोग नाराज थे. कारण जो भी हो - शम्सुद्दीन के जीवन को अब दुश्मनों से खतरा था. इसलिए शम्सुद्दीन ने अचानक कोन्या छोड़ने का फैसला किया.

लेकिन, क्या सच में शम्सुद्दीन घर छोड़ पाए? उस समय के एक लेखक के अनुसार, जब रूमी और शम्सुद्दीन एक रात को गहरी चर्चा में तल्लीन थे, तभी दरवाजे पर दस्तक हुई और शम्सुद्दीन को बाहर बुलाया गया. एक घंटे तक रूमी ने अपने दोस्त का इंतजार किया, लेकिन फिर शक होने पर उसने खुद रात में दरवाज़े से बाहर कदम रखा और अपने दोस्त के नाम को बार-बार पुकारा. लेकिन उसे कोई जवाब नहीं मिला. रूमी ने चिंतित होकर बगीचे के चारों ओर तलाशा लेकिन उससे भी कोई फायदा नहीं हुआ. बाहर अंधेरा था और कुछ भी देखना मुश्किल था, इसलिए वो वापस अंदर आए और उन्होंने सुबह होने की प्रतीक्षा करने का फैसला किया. लेकिन तभी उन्हें असली भयावहता का पता चला. शम्सुद्दीन को एक व्यक्ति ने चाकू से मार डाला था और उसके शरीर को कुएं में फेंक दिया था. यह नृशंस हत्या जाहिर तौर पर रूमी के दूसरे बेटे ने ही की थी.

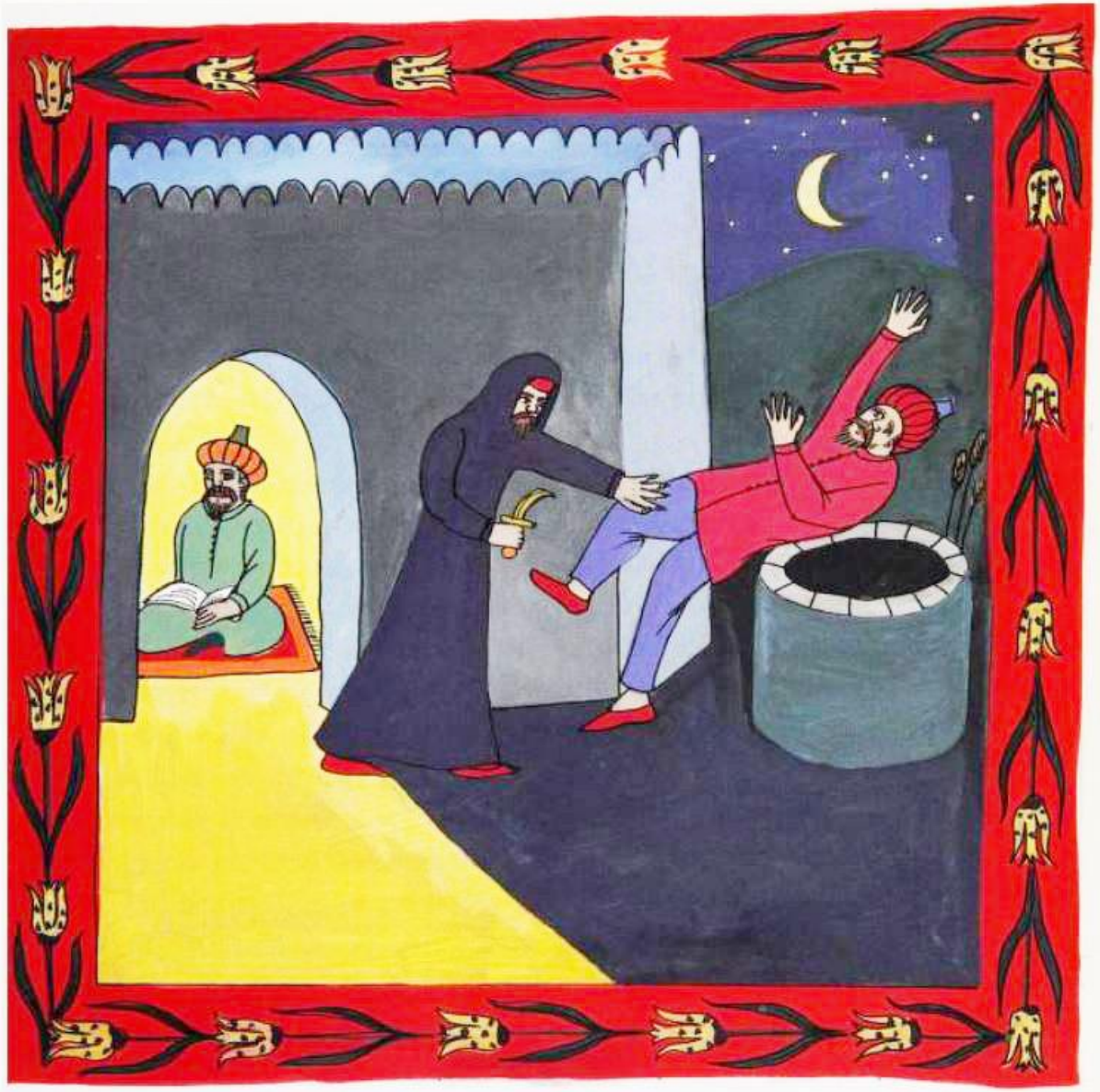

रूमी ने प्रार्थना और उपवास करके एक समर्पित जीवन जीना जारी रखा. उन्होंने अपने अनुयायियों को पढ़ाया और गरीब लोगों की मदद की. उन्होंने कभी अपने लिए कुछ नहीं मांगा, लेकिन वो अक्सर अन्य गरीबों के लिए कोन्या के अमीर और शक्तिशाली लोगों की मदद लेते थे. जब उनके खुद के घर में खाने के लिए कुछ नहीं होता, तो वो प्रसन्न होते और कहते: "आज हमारा घर संतों के घर जैसा है."

रूमी अपना अधिकांश समय ध्यान में बिताते थे. उन्होंने खुद को कम सोने और केवल उतना ही खाने के लिए प्रशिक्षित किया जितना उनके शरीर को चाहिए था. गर्मी के दिनों में अपने दोस्तों और अनुयायियों के साथ शहर से बाहर पिकनिक पर जाना और ग्रामीण इलाकों की शांति से घूमना और पन-चक्की की मधुर ध्वनि का आनंद लेने में उन्हें बड़ा मज़ा आता था.

इसी समय रूमी की चलबी नाम के एक व्यक्ति से घनिष्ठ दोस्ती हुई. चलबी, कोन्या का एक व्यापारी थे और रूमी को कई सालों से जानते थे. वो चलबी ही थे जिन्होंने रूमी को उनकी सीखों को एक पुस्तक लिखने के लिए मनाया था. उस पुस्तक से रूमी के अनुयायियों और आने वाली पीढ़ियों को लाभ होगा. उस समय तक, रूमी के शिष्य अन्य फ़ारसी कवियों के लेखों का अध्ययन करते थे.

रूमी ने अब अपने मित्र चलबी को वो विशाल कृति सुनाई, जिसे "मथनवी" के नाम से जाना जाता है. यह कविता की एक पुस्तक है जिसमें कम-से-कम छह खंड हैं और लगभग 30,000 छंद हैं. चलबी, रूमी द्वारा सुनाए सभी छंदों को लिख देते थे - या तो जब वे दोनों घर में एक साथ बैठे होते थे, या फिर सड़क पर चल रहे होते थे, या फिर जहां कहीं भी होते थे. फिर उन छंदों को दुबारा पढ़ा जाता था और यदि आवश्यक होता, तो उन्हें सुधरा जाता था. आज "मथनवी" पूरी दुनिया में, मूल फ़ारसी में और कई अनुवादों में पढ़ी जाती है. आज वो कविताओं की सबसे महत्वपूर्ण पुस्तकों में से एक बन गई है.

1273 में रूमी बीमार हो गए और डॉक्टर उनकी बीमारी का पता नहीं लगा पाए. धीरे-धीरे वो कमजोर होते गए और जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि वो अब ठीक नहीं होंगे. चारों ओर से लोग आकर उन्हें श्रद्धांजलि देने आए. अपनी मृत्यु-शय्या पर लेटे हुए उन्होंने स्वर्ग और परियों के बारे में कविताओं का पाठ करके अपने मिलने वालों को सांत्वना दी.

अपनी सबसे प्रसिद्ध कहानियों में से एक में, रूमी ने दिखाया कि मृत्यु को किसी भी तरह टाला नहीं जा सकता था. एक दिन पैगंबर, राजा सुलैमान, अपने सिंहासन पर बैठे थे, जब अली नामक एक व्यक्ति उन्हें देखने आया. उसका चेहरा डर से एकदम सफेद था.

"क्या बात है?" सुलैमान ने पूछा.

"महामहिम," उस आदमी ने ठिठकते हुए कहा. "मैंने अभी-अभी मौत के दूत को देखा है, और वो मुझे बहुत ही अजीब तरीके से देख रहा था. वो मुझे घुड़की दे रहा था. महामहिम, आपको मेरी मदद करनी चाहिए!"

"लेकिन मैं क्या कर सकता हूं?"

"हवाओं को आज्ञा देन कि वे मुझे... हिन्दुस्तान ले जाएँ! शायद वहां मैं शरण ले सकूं."

सुलैमान ने आह भरी, क्योंकि वो जानते थे कि अली को मृत्यु के दूत दिखाई देने का अर्थ था, कि पृथ्वी पर अब उसका समय समाप्त हो गया था. उसके छिपने की कोई जगह नहीं थी. फिर भी, अली उनका दोस्त था, इसलिए उन्होंने हवाओं को उसे हजारों मील दूर ले जाने की आज्ञा दी, जिसका पलक झपकते ही पालन हुआ.

उस शाम को सुलैमान ने मौत के दूत को बुलाया। "मुझे बताओ," उन्होंने पूछा, "तुम मेरे दोस्त अली को इतने अजीब तरीके से क्यों देखा?"

"महामहिम (यह न भूलें कि पैगंबर, परियों की तुलना में भगवान के ज़्यादा करीब होते हैं), मुझे कल सुबह बताया गया था कि इस आदमी का पृथ्वी पर समय, हिंदुस्तान में, समाप्त हो गया था, और मुझे उसकी आत्मा को स्वर्ग की ओर ले जाने का निर्देश दिया गया था. कल्पना करें मुझे तब कितना आश्चर्य हुआ जब आज सुबह मैं आपके दरबार में श्रद्धांजलि अर्पित करने आया और मैंने उस व्यक्ति को आपके सामने खड़ा पाया. मेरी अजीब अभिव्यक्ति मेरी उलझन के कारण थी. वो आदमी, जिसकी आत्मा मुझे हिंदुस्तान से लेनी थी, वो आपके सामने आपकी अदालत में कैसे खड़ा हो सकता था? वैसे मैं इस लंबी कहानी को छोटा करने के लिए आपको यह बताना चाहता हूँ कि मैं अभी-अभी स्वर्ग से लौटा हूँ और आपको यह सुनकर राहत मिलेगी कि अली वहां पर सुरक्षित है."

सुलैमान को तब समझ में आया कि पृथ्वी पर कोई भी शक्ति, यहां तक कि पैगंबर की ताकत भी, मनुष्य को उसके भाग्य से, या उसकी मृत्यु से नहीं बचा सकती थी. राजा को समझ में आया कि परमेश्वर की इच्छा को कभी टाला नहीं जा सकता था.

*****

"मथनवी" के अलावा रूमी के अन्य लेखों में कई कहानियाँ हैं जो आनंदमय ज्ञान से भरी हैं. उनमें से कई जानवरों के बारे में हैं, क्योंकि, अन्य महान इस्लामी विचारकों की तरह, उन्होंने भी शास्त्रीय पुस्तक "कलिला वा डिमना" में वो कहानियां पढ़ी थीं. इन कहानियों में जीवन की सच्चाई के बारे में बताने के लिए जानवरों का इस्तेमाल किया जाता है. रूमी लिखते हैं:

"उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि आपने एक कुत्ते के गले में सोने का कॉलर बाँध दी है. आपने उसके गले में एक सोने का कॉलर जरूर बाँधा है पर आप उसे एक शिकार कुत्ता नहीं मानेंगे. एक शिकारी कुत्ते में कुछ विशेष गुण होते हैं, चाहे उसके गले में एक सोने का एक कॉलर बंधा हो या एक तार का एक टुकड़ा बंधा हो. बिल्कुल उसी तरह, कोई आदमी एक महंगा चोगा और पगड़ी पहनने से विद्वान नहीं बन जाता है."

रूमी की महान कविता में लगभग हर जानवर और पक्षी का अपना स्थान है. ऊंट, दुनिया के उस हिस्से में उस समय परिवहन का मुख्य साधन थे. इसलिए ऊंट निश्चित रूप से अपने सवार की आवाज सुनता हैं और उसे वो अपना गायन ज़ारी रखने के लिए प्रोत्साहित करता है. कई कहानियों में कुत्तों और बिल्लियों को केंद्रीय पात्रों के रूप में पाया जाता है. एक में बिल्ली को पुलिसवाला बताया गया है, जो अगर जागती है और अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करती है, तो वो घर को चूहों से मुक्त रख सकती है. कुत्ते की कभी-कभी पुरुषों की मिसाल दी जाती है. रूमी बताते हैं कि कुत्ता लेटने और सोने से संतुष्ट नहीं होता है, क्योंकि उसे यह उम्मीद होती है कि कोई उसे खाने के लिए कुछ ज़रूर देगा. कुत्ता भोजन मांगते समय अपनी पूंछ ज़रूर हिलाता है, जबकि अधिकांश लोग भगवान से अच्छी चीजें मांगते समय कुछ भी श्रम नहीं करते हैं. "फिर तुम लोग भी अपनी पूंछ क्यों नहीं हिलाते?" रूमी लोगों से पूछते हैं.

रूमी, शेरों,लोमड़ियों, गीदड़ों और गधों का उपयोग करके कुछ ऐसी स्थितियों को चित्रित करते हैं जिनमें मनुष्य स्वयं को पाता है. रूमी यह दिखाने के लिए कि वे कितने चतुर और मेहनती हैं, मधुमक्खियों और चींटियों (दोनों जीवों पर कुरान में अध्याय हैं) जैसे छोटे और सबसे तुच्छ जीवों की भी मिसाल देते हैं.

रूमी विभिन्न प्रकार के पक्षियों के बारे में भी लिखते हैं. कोकिला की सुंदर आवाज, तोता मानव आवाज़ की नकल करने में सफल होता है, और बाज़ जिसे लोग शिकार के लिए पालते हैं और प्रशिक्षित करते हैं, मोर जो गर्व और अहंकार का प्रतीक है. फिर मुर्गा है जिसकी इसलिए प्रशंसा की जाती है क्योंकि वो लोगों को सुबह-सुबह प्रार्थना करने के लिए बुलाता है.

रूमी के बारे में एक कहानी है कि वो एक तालाब के पास बैठकर ध्यान करना चाहते थे, लेकिन मेंढक उन्हें अपनी कर्कश टर्राहट से लगातार परेशान करे जा रहे थे: "अगर तुम्हारे पास कुछ बेहतर कहने को हो," रूमी ने मेंढकों से कहा, "तब ज़रूर कहो - अन्यथा सुनो." उसके बाद मेंढक चुप हो गए.

हालांकि रूमी द्वारा जानवरों के सुनाए किस्से बहुत मनोरंजक हैं, लेकिन उनमें हमेशा एक गहरा संदेश होता है. एक दिन एक शेर का बच्चा अकेला भटकता रहा फिर उसने खुद को खोया हुआ पाया. उसने परेशान होकर इधर-उधर देखा लेकिन उसे माता-पिता या किसी अन्य शेर का कोई नामों-निशाँ नहीं दिखा. स्वभाव से शेर होने के कारण उसे डर नहीं लगा और वो दोपहर की धूप में लेट गया और फिर सो गया. जागने पर, शावक ने जब अपनी आँखों को रगड़ा तो उसने खुद को एक भेड़ों के झुंड से घिरा हुआ पाया.

"बा-बा!" भेड़ों ने उसका अभिवादन किया. और चूंकि शावक अभी भी इतना छोटा था इसलिए वो यह समझ नहीं पाया कि वो वाकई में एक शेर था या नहीं. उसने खुद को एक भेड़ समझा.

"बा-बा!" कहकर शेर के बच्चे ने बाकी भेड़ों का अभिवादन लौटाया, और फिर वो उनके साथ खेलने और मस्ती करने लगा.

दिन बीतते गए और शेर का बच्चा भेड़-बकरियों के साथ रहने लगा. वो उछलता, खिलखिलाता और उनके साथ खेलता, हालाँकि बा-बा के अलावा वो उनका कहा और कोई शब्द नहीं समझ पाता था! शेर के बच्चे ने महसूस किया कि वो भेड़ों से तेज़ दौड़ सकता था, अधिक दूर देख सकता था और बेहतर सुन सकता था. लेकिन वो हमेशा भूखा रहता था. उसे घास खाने में मज़ा आने लगा था, लेकिन मांस जैसा कोई अन्य भोजन उसे उपलब्ध नहीं था!

कभी-कभी दूर की किसी आवाज से भेड़ें दहशत में भागने लगती थीं, जबकि शेर के बच्चे पर उसका कुछ असर नहीं होता था. एक सुबह, जब भेड़ें चर रही थीं, तब पास के घने जंगल में एक आवाज सुनाई दी.

भेड़ों ने अपने कान खड़े किये और इससे पहले कि शेर शावक अपनी पलक झपक पाता, भेड़ें सभी दहशत से भाग रही थीं. भेड़ों के झुंड के पास एक शेर था. शेर शावक ने मन-ही-मन सोचा कि शेर से भला भेड़ें क्यों डर रही थीं?

"बा-बा!" उसने शेर के पास उछलते हुए कहा.

"दहाड़!" शेर की तेज़ दहाड़ उस छोटे शावक को सुनाई दी.

"मेरे साथ आओ," शेर ने शावक को आज्ञा दी, और फिर वो उसके साथ चल पड़ा. कुछ देर बाद वे एक झील पर पहुँचे.

"पानी में अपना चेहरा देखो," शेर ने किनारे पर रेंगते हुए और पानी में झांकने के लिए शावक को आदेश दिया. "तुम शेर हो, शेर के बेटे, शेर के पोते. भेड़ नहीं. अब मेरे साथ दहाड़ो. दहाड़ो!"

"बा-बा!"

"दहाड़!"

"बाबा!!"

"दहाड़!"

"ये बेहतर है."

तुम जानते हो, वो दहाड़ बहुत बेहतर थी. भेड़ के बच्चे ने महसूस किया कि उसमें ऊर्जा वापस बह रही थी. भेड़ जैसे बा-बा करना ठीक था लेकिन उसके लिए अच्छी दहाड़ जैसा और कुछ नहीं था. अब वो यह समझ गया था कि वो भेड़ नहीं बल्कि एक शेर का बच्चा था!

"अब मैं तुम्हें तुम्हारे माता-पिता के पास वापस ले जाऊंगा. और यह मत भूलो कि तुम कौन हो. शेर जानवरों का राजा होता है. सिर्फ इसलिए कि कुछ भेड़ों ने तुम से बा-बा कहा इसका मतलब यह नहीं है कि तुम भूल जाओ कि तुम असल में कौन हो."

इस तरह, रूमी, शेर-शावक की कहानी का उपयोग यह दिखाने के लिए करते हैं कि मनुष्य केवल तभी खुश हो सकता है जब वो स्वयं के प्रति सच्चा रहे.

रूमी को बिल्लियों का विशेष शौक था. ऐसा कहा जाता है कि, उनकी मृत्यु के बाद, उनकी बिल्ली ने कुछ भी खाने से इनकार कर दिया और एक सप्ताह बाद उसकी भी मृत्यु हो गई. रूमी की बेटी ने बिल्ली को, अपने पिता की कब्र के पास ही दफना दिया.

17 दिसंबर 1273 को सूर्यास्त के समय रूमी की मृत्यु हो गई. उनके ज़नाज़े में न केवल मुसलमान, बल्कि यहूदी और ईसाई भी बड़ी तादाद में शामिल हुए, क्योंकि रूमी ने हमेशा अन्य धर्मों का आदर किया था. आज, उनकी मृत्यु के सात सौ से अधिक वर्षों के बाद भी, लोग उन्हें दुनिया के महान कवियों और संतों में से एक मानते हैं और रूमी के मकबरे का दर्शन करने के लिए कोन्या की यात्रा करते हैं.

समाप्त